''गीता मे यज्ञ''

डॉ निरूपमा सिंह

गीता में जिस यज्ञ को बताया गया है वह कर्म का प्रतिफल है। ऐसा कर्म जिसमें अधिक से अधिक जीवों का अधिक से अधिक क्षेत्र में कल्याण हो वह यज्ञ है। अर्थात् ऐसी सेवा जो समस्त प्रकार के बन्धनों एवं द्वन्द्वों से मुक्त होकर आत्म साक्षात्कार का कारण हो वह यज्ञार्थ कर्म है। 'अपने कृत्यों का सम्बन्ध परमेश्वर से जोड़ना चाहिए कर्म यदि शुद्ध भावना से परिपूर्ण एवं सेवामय हो तो वह यज्ञ है। यज्ञ नित्य कर्त्तव्य है। यज्ञ में त्याग का होना आवश्यक है। त्याग का तात्पर्य आसक्ति एवं कामनाओं का त्याग है। कर्त्तव्य कर्मो का त्याग नहीं। त्याग संसार से भागकर जंगल में वास करना नहीं। अपितु जीवन की प्रवृत्ति मात्र में त्याग का होना है।